नेक सफ़र मुश्किल डगर

शिक्षक तबीबुल्ला खान से बेदांगो कोटोकी व प्रियांकू हजारिका की बातचीत

काबिलाबाद हाई स्कूल असम प्रदेश के शोणितपुर जिले के नपाम इलाके में आने वाला एक सरकारी विद्यालय है। तेजपुर विश्वविद्यालय के करीब ही यह विद्यालय एक ऐसी जगह पर बसा हुआ है जिसे एक ओर बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा तो दूसरी तरफ शैक्षणिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है।

यह स्कूल मुस्लिम बहुल इलाक़े में है, लेकिन यहाँ असमिया, बंगाली, नेपाली व मिसिंग भाषी समुदाय भी रहते हैं। क्योंकि इस अंचल के ज़्यादातर लोग अशिक्षित थे इसलिए धार्मिक हठधर्मिताओं का प्रभाव यहाँ पर ज़्यादा था। मुस्लिम बहुल इलाक़े में होने के कारण यहाँ सरकारी शिक्षा से अधिक इस्लामिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती थी। इन्हीं समस्याओं से संघर्ष करते हुए इसी अंचल के एक कर्मठ शिक्षक तबीबुल्ला खान ने वर्ष 1991 में इस स्कूल की शुरुआत की थी। 20–25 बच्चों को लेकर बिना किसी सरकारी सुविधा के केवल सामाजिक अनुदान पर शुरू हुआ यह स्कूल तमाम दिक़्क़तों के बावजूद आज सरकारी स्कूल का दर्जा पा चुका है और तक़रीबन 900 बच्चों के शिक्षण से जुड़ा हुआ है। ग़ौरतलब है कि असम में जो स्कूल केवल सामाजिक अनुदान पर कार्यशील होते हैं, उन स्कूलों को Venture स्कूल का दर्जा दिया जाता है। सरकारी सुविधा पाने के लिए यानी कि Provincialise स्कूलों के श्रेणी में आने के लिए इन स्कूलों को कई सारे मापदण्डों पर खरा उतरना पड़ता है।

काबिलाबाद स्कूल को इस मुकाम तक पहुँचाने में खान साहब की प्रधान भूमिका रही है। स्कूल के ज़रिए आसपास के समाज में फैले पिछड़ेपन को दूर करने में भी उन्हें काफ़ी कामयाबी मिली है। इस साक्षात्कार में जो बच्चे अपने परिवारों से पहली दफा स्कूल गए हैं उनको शिक्षा के प्रति आकर्षित करने से लेकर शिक्षा से जुड़ी तमाम दिक़्क़तों के बारे में खान साहब से बात करने की कोशिश की गई है और उनका दृष्टिकोण जानने का प्रयास किया गया है। साक्षात्कार के ज़रिए एक स्कूल के Venture से सरकारी बनने की यात्रा जानने की कोशिश की गई है। सिल्वर जुबली मना रहे इस विद्यालय के सन्दर्भ बिन्दु रहे खान सर से शिक्षक के समाज, शिक्षा और छात्र-अभिभावक के सम्पर्क से जुड़े तमाम बिन्दुओं पर उनका नज़रिया जानने का प्रयास किया गया है।

सवाल : अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव के बारे में कुछ बताइए।

तबीबुल्ला खान : मेरा विद्यार्थी जीवन शुरू हुआ। कालीघाट Lower Primary (LP) स्कूल से जहाँ मैंने क, ख, 1, 2, व 3 कक्षाओं की पढ़ाई की। यह स्कूल मेरे घर के काफ़ी क़रीब था। उसके बाद मेरा दाख़िला पाँच-माइल हाई स्कूल में करवाया गया। जहाँ पर मैंने कक्षा नौ तक की पढ़ाई की। उस समय हमारे क्षेत्र में वही एक स्कूल था। हर एक कक्षा में केवल 27-28 विद्यार्थी थे। यदि मुस्लिम छात्रों की बात करें तो कक्षा 4 में केवल 2 ही मुस्लिम छात्र थे,

वहीं कक्षा पाँचवी व आठवीं में केवल एक-एक मुस्लिम छात्र यानी कि पूरे स्कूल में केवल 4 मुस्लिम छात्र थे जिनमें से एक मैं था। आसपास की जगहों के लोग काफ़ी ग़रीब थे और पैदल ही स्कूल आते-जाते थे। स्कूल में दो रुपए महीना फ़ीस देनी पड़ती थी। जिस घर के दो बच्चे स्कूल में पढ़ते थे उनकी फ़ीस आधी हो जाती थी। लेकिन दो रुपए हर महीने देने में सभी लोगों को काफ़ी दिक़्क़त आती थी। कक्षा 10 में मेरा दाख़िला तेजपुर में लड़कों के लिए चलने वाले सरकारी स्कूल में हो गया। वहीं से मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। जिसके बाद दारंग कॉलेज, तेजपुर से हिस्ट्री में ऑनर्स किया। बाद में उच्च शिक्षा के लिए गया, लेकिन आर्थिक दिक़्क़तों के चलते वह पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।

सवाल : आप शिक्षक कैसे बने? क्या आप हमेशा से ही शिक्षक बनना चाहते थे?

तबीबुल्ला खान : अपने कॉलेज के दिनों में मैं पास के ही प्राथमिक स्कूल में कभी-कभी पढ़ाने चला जाता था। जिन घरों के बच्चे स्कूल में आने से कतराते थे उनके घर जाकर उन्हें स्कूल में आने के लिए प्रोत्साहित करता था। मुझे समझ आया कि जिन बच्चों के बारे में दूसरे लोगों का ख़याल था कि उनकी मैरिट अच्छी नहीं है, उनके प्रति भी ख़ास ध्यान देने से वे अच्छा कर सकते थे। तभी से मैं पढ़ाने से जुड़ा हुआ हूँ। कॉलेज में पढ़ते समय जिन छात्रों को मैंने पढ़ाया था, आज वे सभी अलग-अलग पदों पर कार्यरत हैं और उनके बच्चे भी मेरे छात्र हैं।

सवाल : आपने स्कूल क्यों खोला? स्कूल खोलते वक़्त आपने किन दिक़्क़तों का सामना किया? उस समय के छात्रों की आर्थिक पृष्ठभूमि कैसी थी?

तबीबुल्ला खान : उन दिनों मैं नक्सलबाड़ी आन्दोलन से प्रभावित था और जगह-जगह घूमा करता था। वहीं दूसरी तरफ़ असम आन्दोलन भी ज़ोरों पर था। बाद में मुझे एहसास हुआ कि जगह-जगह घूमकर इंकलाब ज़िन्दाबाद का नारा लगाने से शायद बेहतर हो कि कहीं एक जगह टिककर कुछ ज़मीनी काम किया जाए। उन दिनों मेरे घर के आसपास के इलाक़ों में कोई भी Middle English (ME) या हाई स्कूल नहीं था। प्राथमिक कक्षाओं के बाद की कक्षाओं के लिए एक अच्छा स्कूल खोलने की दरकार थी। सरकारी नौकरी के प्रति मेरा आग्रह नहीं था। गाँव में मेरे परिवार की दी गई ज़मीन पर एक लोअर प्राइमरी स्कूल चल रहा था। उसी स्कूल की ख़ाली पड़ी ज़मीन पर मैंने इस स्कूल की शुरुआत की।

अगर मैं स्कूल की प्रतिष्ठा के समय होने वाली परेशानियों के बारे में बात करूँ तो जब मैंने अपना स्कूल शुरू किया, तब पढ़ाने से लेकर, स्कूल प्रबन्धन, शिक्षकों की भर्ती– ऐसे सभी काम मैं अकेले ही कर रहा था। जब अन्य शिक्षक भी स्कूल से जुड़े तो लगभग शुरुआती 8 सालों तक, मैं न तो अपने-आपको और न ही बाक़ी शिक्षकों को कोई भी वेतन दे पाया था। हम जिन बच्चों के साथ काम कर रहे थे, उन बच्चों के माँ-बाप दिहाड़ी कामगार होने के चलते सरकारी स्कूल में होने वाले थोड़े से ख़र्चे तक को वहन करने में सक्षम नहीं थे, तो उनसे फ़ीस मिलने की बात नामुमकिन-सी थी। साथ ही स्कूल में बच्चों का दाख़िला करवाने के लिए भी घर-घर जाकर समझाना पड़ता था। ऐसे कई परिवार थे जिनमें कभी किसी ने स्कूल ही नहीं देखा था और कई परिवारों के बच्चे एक ही कक्षा में कई दफ़े फ़ेल होकर घर पर बैठ गए थे। हम चाहते थे कि उन बच्चों को एक और मौक़ा मिले, लेकिन उनको स्कूल में लाने में बहुत दिक़्क़तों का सामना करना पड़ा। कई बच्चे जिनके घरों की आर्थिक स्थिति ख़राब थी वे अकसर ही खेतों या अन्य कामों में अपने माँ-बाप का हाथ बँटाते थे। बच्चों के स्कूल में आने से उन घरों की कमाई पर असर पड़ता था। माँ-बाप को यह भी डर रहता था कि स्कूल की संस्कृति में ढलकर बच्चे अपने संस्कारों को नहीं मानेंगे। उदाहरण के तौर पर, यहाँ के मुस्लिम

समुदाय के पुरुषों में बैठकर पेशाब करने का रिवाज है। माँ-बाप हमसे कहते थे कि स्कूल में जाकर बच्चे ऐसा नहीं करेंगे, ग़लत बातें सीखेंगे। फिर उन्हें यह भी डर था कि बच्चे उनकी बात नहीं मानेंगे और उनका सम्मान नहीं करेंगे।

सवाल : आपके जवाब से एक प्रश्न उठता है कि अगर स्कूल प्रतिष्ठा के समय छात्रों से कोई भी फ़ीस नहीं ली जाती थी तो स्कूल से जुड़े ख़र्चों का प्रबन्ध कैसे होता था ?

तबीबुल्ला खान : 1997 से पहले मैं परिवार से मिले अपने जेब ख़र्च और आसपास के कुछ परिवारों से मिली आर्थिक मदद से स्कूल के ख़र्च निकाल रहा था। उन दिनों मैं और मेरे साथी शिक्षक सभी युवा थे। पैसों की इतनी फ़िक्र नहीं करते थे। बच्चों के साथ अच्छा लगता था तो स्कूल में और स्कूल ख़त्म होने के बाद उनके घरों में जाकर भी उनके साथ समय बिताया करते थे। पर धीरे-धीरे जब हम साथियों पर अपने-अपने परिवारों की ज़िम्मेदारी बढ़ी तो 1997 में स्कूल ख़र्च, जिसमें शिक्षकों के लिए भी कुछ थोड़े मेहनताने की गुंजाइश थी, को ध्यान में रखकर समुदाय की एक मीटिंग स्कूल में बुलवाई गई। उसमें यह तय हुआ कि हर बच्चे से महीने का तीन रुपए फ़ीस के तौर पर लिया जाएगा। इस थोड़ी-सी कोशिश के चलते यह सम्भव हो पाया कि हम शिक्षकों को सालाना एक-दो हज़ार रुपए दे पाए।

सवाल : अपने स्कूल के शुरुआती दिनों के बारे में कुछ बताइए। शुरुआत में कितने बच्चे आए ? उनको स्कूल में लाने के लिए आपने क्या-क्या किया ? बच्चों को स्कूल के प्रति आकर्षित करने के लिए आप क्या तरीक़े अपनाते थे ?

तबीबुल्ला खान : जैसा कि मैंने आपको बताया जिस जगह पर मैंने स्कूल शुरू किया वहाँ पहले से ही एक लोअर प्राइमरी स्कूल चल रहा था। मैंने उस स्कूल के एक कमरे और साथ की ख़ाली पड़ी ज़मीन पर मिडिल इंग्लिश स्कूल की शुरुआत की। स्कूल खोलने की प्रक्रिया में मैंने आसपास के लोगों को साथ में लाने की कोशिश की और इस प्रयास में 10-15 लोग जुड़े भी, जिनके साथ चर्चा करके मिडिल इंग्लिश स्कूल खोला गया। इस प्रयास में लोअर प्राइमरी स्कूल के एक शिक्षक ने ख़ास योगदान दिया और इस तरह 1991 में कक्षा 5 के साथ स्कूल शुरू हुआ, फिर 1992 में कक्षा 6 और फिर अगले वर्ष कक्षा सातवीं। आसपास के लोअर प्राइमरी स्कूलों के कमज़ोर कहे जाने वाले बच्चों के साथ पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला शुरू हुआ।

जब 1994 में बच्चों के कक्षा 8 में जाने का प्रश्न सामने आया, तब फिर से स्थानीय लोगों को बुलाकर हाई स्कूल शुरू करने के बारे में भी बात की गई। और तब उनकी रज़ामन्दी के साथ यह स्कूल शुरू हुआ। मेरे ही स्कूल के उन कमज़ोर कहे जाने वाले बच्चों में से दस बच्चों के साथ आठवीं कक्षा की शुरुआत हुई। उनमें से चार बच्चों ने 1997 में मैट्रिक बोर्ड की परीक्षा दी जिनमें से दो थर्ड डिवीजन में पास हुए।

पहले तो बच्चे काफ़ी कम थे। लेकिन 1994 में एक घटना के चलते लड़कियों की संख्या ज़्यादा होने लगी। स्कूल में एक लड़का किसी लड़की से बदतमीज़ी से बात करते हुए उसे गालियाँ दे रहा था। मैंने वे बातें सुन लीं। मैंने उस लड़के को सभी के सामने डाँट-फटकार भी लगाई और उसे ऐसा न करने की चेतावनी दी। हालाँकि उस लड़के के घर वाले मुझसे नाराज़ हो गए, लेकिन जब लोगों को समझ आया कि मैं अपने स्कूल में ऐसी बातों के लिए सख़्त हूँ, तो वे ज़्यादा संख्या में अपनी बच्चियों को स्कूल भेजने लगे। इसके अलावा, स्थानीय लोगों के साथ मिल कर मैंने स्कूल आने वाली बच्चियों को रास्ते में लड़कों द्वारा परेशान करने की घटनाओं पर भी रोक लगाने की कोशिश की।

दूसरी ओर हमारी कोशिश होती थी कि बच्चों को उनकी ज़रूरतों का सारा सामान मिले। जिन बच्चों को स्कूल ड्रेस की दरकार होती थी, उन्हें ड्रेस मुहैया करवाई जाती थी।

इसी तरह हमारी कोशिश होती थी कि पेंसिल, कॉपी, पुस्तक जैसी दूसरी चीज़ें भी ज़रूरतमन्द बच्चों को मिलें।

सवाल : आपने बताया कि ऐसे कई परिवार थे जिनके बच्चे पहली बार स्कूल आ रहे थे उन परिवारों के बच्चों को आप कैसे सिखाते थे ?

तबीबुल्ला खान : उन दिनों हमारे स्कूल में ज़्यादातर बच्चे मुस्लिम समुदाय के थे। मुस्लिम घरों से आने वाले बच्चों को अरबी भाषा की तालीम मिली होती थी, तो इसलिए ऐसे बच्चे स्कूल के अनुशासन से वाक़िफ़ थे, जिसके चलते हमें उनका अलग से ध्यान नहीं रखना पड़ता था। कक्षा के अनुशासन से वे वाक़िफ़ होते थे। जो बच्चे कक्षा में सीखने के बाद भी अच्छा नहीं कर पाते थे उन्हें एक्स्ट्रा क्लास दी जाती थी।

सवाल : आप अपने स्कूल की भौगोलिक स्थिति के बारे में कुछ बतलाइए ?

तबीबुल्ला खान : असम में बाढ़ एक समस्या है। हमारा स्कूल और उसके आसपास का इलाक़ा जिया भराली नदी के पास होने के चलते हर साल बाढ़ से प्रभावित होता है। इस दौरान कई परिवार विस्थापित होते हैं और उनके साथ हमारे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे भी। कई बार ऐसा भी हुआ है कि बाढ़ का पानी हमारी कक्षाओं में घुस गया और हमें स्कूल उसी अवस्था में चलाना पड़ा।

सवाल : आपके स्कूल में किन समुदायों के बच्चे पढ़ते हैं ?

तबीबुल्ला खान : हमारे स्कूल में मुस्लिम, बोरो, आदीबासी और कलिता, डेका जैसे असमिया भाषी परिवारों के बच्चे पढ़ने आते हैं। पहले मिसिंग समुदाय के बच्चे भी काफ़ी दूर से आया करते थे, लेकिन फिर उनके घरों के पास स्कूल खुल जाने से अब वे वहीं पढ़ते हैं।

सवाल : इस अंचल में एक शिक्षक होने के नाते आप और कैसी समस्याओं से रूबरू होते हैं ?

तबीबुल्ला खान : मूल समस्या है– धार्मिक कट्टरता, जिसके चलते जितना विकास होना चाहिए था, नहीं हुआ। मुस्लिम समुदाय की लड़कियों को स्कूल न भेजकर बनात में भेज दिया जाता है, जहाँ उन्हें धार्मिक शिक्षा दी जाती है। यह बात भी है कि इस समुदाय में लड़कियों की शादी बहुत कम उम्र में ही कर दी जाती है। यहाँ तक कि लड़कियों की ख़ुद की इच्छा को भी दरकिनार कर दिया जाता है। ऐसी बहुत-सी लड़कियाँ हैं जिन्हें दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी मिली थी और वे आगे पढ़ना चाहती थीं, लेकिन वे ऐसा कर नहीं पाईं।

सवाल : बनात क्या है ?

तबीबुल्ला खान : बनात शब्द अरबी के शब्द बैंतून से आया है, जिसका मतलब है बहन। बनात इस्लाम धर्म की युवतियों को धार्मिक शिक्षा देने की एक व्यवस्था है। कुछ अंचलों में बनात अलग से बनाते हैं, लेकिन हमारे यहाँ यह मदरसे के किसी एक कमरे में ही चलाया जाता है। बनात में पढ़ाने वाले पुरुष होते हैं जो सभी बच्चियों को एक साथ एक कक्षा में बैठाकर पढ़ाते हैं। बच्चियों को उस कक्षा से बाहर आने की अनुमति नहीं होती है।

सवाल : Provincialisation क्या है ? क्या यह सिर्फ़ असम में ही है ?

तबीबुल्ला खान : एक स्कूल के provincialised होने का मतलब हुआ कि स्कूल के शिक्षकों व अन्य स्टॉफ़ तथा अधोसंरचना (infrastructure) का ख़र्च सरकार वहन करेगी। लेकिन वर्तमान में सरकारी नियमों के चलते मात्र शिक्षकों का ही provincialisation हो रहा है। अधोसंरचना से जुड़े ख़र्चों की ज़िम्मेदारियों को सर्व शिक्षा अभियान (SSA) व राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) जैसी स्वतंत्र संस्थाओं को दिया गया है। हमारे स्कूल का तो सिर्फ़ शिक्षक ही provincialised हुआ है। और ऐसी व्यवस्था बिहार में भी देखने को मिलती है। शिक्षकों के provincialisation का असर हमारे स्कूल पर यह

हुआ कि शिक्षक काफ़ी नियमित व अपने काम को लेकर उत्साहित महसूस करने लगे। ऐसा कहा जाता है कि provincialisation के बाद स्कूलों का स्तर गिर जाता है। लेकिन हमारे स्कूल का स्तर तो पहले से और भी अच्छा हो गया, जो हमारे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या व परीक्षाओं में आने वाले उनके नतीजों में साफ़ दिखता है।

सवाल : क्या आप अपने रोज़मर्रा के प्रशासनिक कामों के बीच कक्षाएँ पढ़ा पाते हैं? एक प्रशासक के नाते आप शिक्षण के कार्य को कैसे देखते हैं?

तबीबुल्ला खान : प्रधान शिक्षक होने के बावजूद मैं दिन की शुरुआती चार कक्षाएँ पढ़ाता हूँ। लेकिन स्कूल के दायित्वों के चलते पहले पीरियड के शुरुआती दस से पन्द्रह मिनट व्यवस्था बनाने में निकल जाते हैं, क्योंकि मुझपर पढ़ाने के साथ-साथ प्रशासन की भी ज़िम्मेदारी है तो प्रशासनिक काम स्कूल के बाद रात में करता हूँ। इसके अलावा, स्कूली व्यवस्था से जुड़े अन्य दफ़्तरों जैसे कि स्कूल इंस्पेक्टर का ऑफ़िस, कलेक्टर ऑफ़िस वग़ैरह से जुड़े काम स्कूल की छुट्टी के बाद ही हो पाते हैं। उन दफ़्तरों में भी मेरी यही छवि है कि मैं अपना पढ़ाने का काम ख़त्म करके ही वहाँ जाता हूँ। अगर कभी वहाँ पहले पहुँच जाऊँ तो उन लोगों को हैरानी होती है।

सवाल : आपकी नज़र में एक अच्छे शिक्षक में कैसी ख़ूबियाँ होनी चाहिए?

तबीबुल्ला खान : मेरी समझ में एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो समाज से जुड़ा हुआ होता है और साफ़-सफ़ाई पर ज़ोर देता हो। स्कूल के अलावा स्कूल के आसपास की समस्याओं पर भी ध्यान देता हो। जो शिक्षक अपने ही काम में व्यस्त रहता है, आसपास के परिवेश के प्रति ध्यान नहीं देता, तो मेरी नज़र में वह एक अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता।

सवाल : आपके नज़रिए में कौन एक अच्छा छात्र है? और वह बाक़ी छात्रों से कैसे अलग होता है?

तबीबुल्ला खान : ऐसा बच्चा जो कक्षा में नियमित हो, पढ़ने पर ध्यान दे, अनुशासन माने और अपने ज्ञान पर घमण्ड न करते हुए लगातार सीखने की कोशिश में हो— मेरी समझ से वही एक अच्छा छात्र है। यही ख़ूबियाँ उसे दूसरों से अलग बनाती हैं।

सवाल : बच्चों के माँ-बाप के साथ आपके सम्बन्ध कैसे हैं? शिक्षकों व अभिभावकों की बैठकें कितने अन्तराल में होती हैं और उनमें किन विषयों पर चर्चा होती है?

तबीबुल्ला खान : शिक्षकों व अभिभावकों की बैठकें हर साल तीन से चार दफ़े होती हैं। इन बैठकों में स्कूली प्रशासन व आर्थिक मसलों से जुड़ी मूल बातों पर चर्चा के साथ-साथ अभिभावकों की परेशानियों पर बातचीत होती है, जिसमें अकसर ही उनके घरों के आर्थिक हालातों और बच्चियों की सुरक्षा जैसी बातें निकलकर आती हैं।

सवाल : स्कूल का प्रिंसिपल होने के चलते आप किन समस्याओं से जूझते हैं? क्या आप मानते हैं कि छात्रों की शिक्षकों द्वारा की जाने वाली पिटाई ज़रूरी है?

तबीबुल्ला खान : अनुशासन को बनाए रखने के लिए डाँट-फटकार और पिटाई ज़रूरी है, ऐसा मुझे लगता है। कुछ बच्चे इतना परेशान कर देते हैं कि उनके माँ-बाप भी उनको नहीं सँभाल पाते। स्कूल में अनुशासन है, इसीलिए ऐसे बच्चे नियमों को मानते हैं। पिटाई नहीं की जाए तो बच्चे शिक्षकों का मज़ाक बनाते हैं। हमारे यहाँ एक शिक्षक हैं जो कि मार-पिटाई पर बिल्कुल यक़ीन नहीं करते, लेकिन उन्हें अपनी कक्षा सँभालने में बहुत दिक़्क़त होती है। पिटाई न की जाए तो ऐसे बदमाश बच्चे अच्छे पढ़ने वाले दूसरे बच्चों को पढ़ने नहीं देते। ऐसे में परिस्थिति के अनुसार अनुशासन बनाए रखने के लिए कभी-कभी पिटाई ज़रूरी हो जाती है। हमारी एक-एक कक्षा में 70-80 बच्चे हैं। इतनी बड़ी कक्षा को बिना छड़ी के सँभालना मुश्किल होता है। वहीं मुझे यह भी लगता है कि अगर

कक्षा में बच्चे कम हों, तो डाँट-फटकार या मार-पिटाई के बिना भी काम हो सकता है।

सवाल : ऐसे बच्चे जिनकी आपने पिटाई की है, उनके साथ आप अपने सम्बन्ध सुधारने के लिए क्या करते हैं ?

तबीबुल्ला खान : देखिए, मेरी बच्चों से दुश्मनी तो है नहीं। कभी-कभी कक्षा का अनुशासन बनाए रखने के लिए मैं कुछ बच्चों को पीट देता हूँ, लेकिन ऐसा नहीं है कि कक्षा में जो भी हुआ उसके लिए मैं उन्हें हमेशा दोषी मानता रहता हूँ। कक्षा की बात कक्षा में ही ख़त्म। फिर सब कुछ सामान्य हो जाता है, जैसे— उनके साथ बातचीत, उन्हें प्यार से थपकी देना आदि कभी-कभी कक्षा के बाहर प्यार से समझाने की कोशिश भी करता हूँ। रास्ते में वे कहीं भी कभी भी मिल जाएँ, तो भी प्यार से बातचीत होती है। उनके माँ-बाप से भी उनके बारे में पूछता रहता हूँ। ऐसा व्यवहार होने के चलते वे बच्चे मुझे अपने पिता की तरह ही मानते हैं और मेरे द्वारा की गई पिटाई का ग़लत मतलब नहीं निकालते।

सवाल : आपके स्कूल से निकल कर गए छात्र कहाँ-कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं ?

तबीबुल्ला खान : उनमें से बहुत सारे अभी TET teacher जूनियर इंजीनियर (Junior Engineer) और असम के बाहर भी अलग-अलग कामों में लगे हुए हैं।

सवाल : वे बच्चे जो ऐसे परिवारों से आते हैं जिनमें उनसे पहले कोई भी बच्चा स्कूल न गया हो, ऐसे बच्चों के घरेलू, सामाजिक व स्कूली परिवेश के बीच आप कैसे तालमेल बैठाते हैं ?

तबीबुल्ला खान : ऐसे परिवारों के बीच एक प्रधान समस्या धार्मिक कट्टरता भी है। हम जो स्कूल में सिखाते हैं, बच्चे उसका उल्टा बाहर सीखते हैं। जैसे कि स्कूल में बुरक़ा पहनने पर मेरा रुख़ बहुत कड़ा है लेकिन घरों व समाज में बुरक़ा पहनने पर ज़ोर है। धार्मिक कट्टरता व प्रगतिशील सोच के बीच का द्वन्द्व लगातार चल रहा है।

सवाल : आप बच्चों को अँग्रेज़ी भी पढ़ाते हैं। अकसर ही अँग्रेज़ी भाषा की पुस्तकों में देखा जाता है कि यह पुस्तकें उस सन्दर्भ या परिवेश से मेल नहीं खातीं, जिसमें वे पढ़ी जा रही हैं। ऐसे में अँग्रेज़ी की शिक्षा से आप बच्चों को कैसे जोड़ पाते हैं ?

तबीबुल्ला खान : क्लास ख़त्म होने के बाद भी अँग्रेज़ी की अतिरिक्त कक्षाएँ ली जाती हैं। इसके अलावा, छुट्टियों के दौरान बच्चों का सम्पर्क इस भाषा से न टूटे, इसलिए शिक्षकों को अतिरिक्त पैसा देकर स्कूल में ही कोचिंग क्लास चलाई जाती है। वैसे तो हमारे स्कूल में कम्प्यूटर नहीं है, लेकिन कक्षा में मोबाइल फ़ोन के माध्यम से ही इस विषय को पढ़ाने में मदद ली जाती है। जैसे कि अँग्रेज़ी rhymes और poems बच्चों को मोबाइल पर सुनवाई जाती हैं।

सवाल : एक प्रधान शिक्षक होने के नाते शिक्षा विभाग की नीतियों व शिक्षा का अधिकार क़ानून पर आपकी क्या राय है ?

तबीबुल्ला खान : शिक्षा विभाग ने जो गुणोत्सव कार्यक्रम लिया है, उसकी वजह से काफ़ी सकारात्मक बदलाव आए हैं। स्कूलों की अधोसंरचना (infrastructure) व शिक्षण गुणवत्ता (teaching quality) बेहतर हुई है। इसके अलावा अगर पाठ्येतर कार्यक्रम (extracurricular program) जैसे कि गीत-संगीत, खेलकूद के लिए अलग से नियुक्तियाँ हों तो स्कूल के लिए और बेहतर होगा। शिक्षा का अधिकार क़ानून के तहत किताबें व यूनिफ़ॉर्म के मुफ़्त वितरण से बच्चों की उपस्थिति पहले से बेहतर हुई है। मिड-डे मील की वजह से भी बच्चों के स्वास्थ्य व उनकी स्कूल में उपस्थिति पर काफ़ी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। लेकिन इस सबके बीच जो सबसे बड़ी समस्या है, वह है शिक्षकों की कमी, जिसपर शिक्षा विभाग को गम्भीरता से ध्यान देने की ज़रूरत है।

सवाल : शिक्षा के विकास के लिए सरकारी नीतियों में आप किस तरह के बदलावों की ज़रूरत महसूस करते हैं ?

तबीबुल्ला खान : कस्बाई क्षेत्रों में कई ऐसे स्कूल हैं जिनमें शिक्षक-छात्र अनुपात काफ़ी ज़्यादा है, वहीं हमारे जैसे स्कूलों में यह काफ़ी कम है। अगर उन स्कूलों से कुछ शिक्षकों को हमारे जैसे स्कूलों में भेज दिया जाए तो काफ़ी मदद होगी। सरकार अकसर ही बेहतर अधोसंरचना वाले स्कूलों में ज़्यादा पैसा डालती है। अगर सरकार उन स्कूलों पर भी ज़्यादा ध्यान दे, जिनका अधोसंरचना कमज़ोर है तो यह शिक्षण में काफ़ी मददगार होगा।

बेदांगो कोटोकी ने स्नातक तक नृविज्ञान पढ़ा हैं तथा फिर तेजपुर विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। उनकी रूचि के क्षेत्र में शामिल हैं होमोसेपियंस और एक प्रजाति के तौर पर उनका सांस्कृतिक उद्विकास और शिक्षा प्रक्रिया। वे अपने वातावरण के प्रति भी एक मानवोचित नज़रिया रखती हैं।

सम्पर्क : bedangokotoki93@gmail.com

प्रियांकू हजारिका, तेजपुर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में शोधार्थी हैं। उन्होंने स्नातक राजनीति विज्ञान में और स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विषय में किया है। उनकी रूचि के क्षेत्र हैं पहचान की राजनीति, भूमि, और सामाजिक आंदोलन, शहरीकरण और शिक्षा का समाजशास्त्र।

सम्पर्क : priyanku36@gmail.com

यह साक्षात्कार आसामीज में किया गया था। इसे हिन्दी में अनुवाद और सम्पादित करने में विवेक मेहता ने मदद की। वे तेजपुर विश्वविद्यालय के मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

सम्पर्क : vivekmehta7481@gmail.com